जीवनपथ हिन्दी

₹ 10/-

JEEVANPATH HINDI

1

Vol. No. 13, Issue No. 9 (₹ १०/– प्रचार के लिए) Mumbai, 15th April 2025

Website : www.jeevanjyot.in Total 36 Pages E-mail : jeevan_jyot@yahoo.in

ॐ सर्वे भवन्तु सुखिनः सर्वे सन्तु निरामया ।

श्री जलाराम अन्नदान क्षेत्र... जय श्री जलाराम बापा'
समाज के लोकहित की भावना में पूर्ण रूप से गैरव्यावसायिक
मुखपत्र **जीवन ज्योत कैंसर रिलीफ एण्ड केअर ट्रस्ट** की भेंट

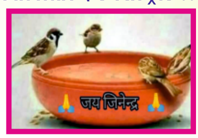

तस्वीर बोल रही हैं, संस्था के गौरव की

गरीब, निराधार कर्करोगग्रस्त मरीजों को अन्नक्षेत्र में, जीवदया में और टॉयबैंक में अनुदान देने वाले और इस अंक के सौजन्यदाता

पल्लवीबेन अे. शाह (सायन)

तस्वीर बोल रही हैं, संस्था के गौरव की

भगवान महावीर स्वामी के जन्म कल्याणक एवं
भारत जैन महामंडल की १२५वीं वर्षगांठ के पावन अवसर पर
योगी सभागृह में विशेष हर्षोल्लास के साथ उत्सव मनाया गया।
प.पू. आचार्यश्री **नयपद्मसागरसूरीश्वरजी म.सा.**,
प.पू. राष्ट्रसंत परम गुरुदेव **श्री नम्रमुनिजी म.सा** के शिष्या
परम समाधिजी महासतीजी, परम श्रीवत्सलजी महासतीजी,
आचार्य **श्री महाश्रमणजी** की शिष्या साध्वीजी **प्रियवंदाजी,**
महाराष्ट्र के राज्यपाल माननीय **श्री सी.पी. राधाकृष्णनजी,**
भारत के उद्योग एवं आपूर्ति मंत्री माननीय **श्री पीयूष गोयलजी,**
विधानसभा अध्यक्ष **श्री राहुल नार्वेकरजी,**
महाराष्ट्र राज्य विकास मंत्री **श्री मंगल प्रभात लोढ़ाजी,**
सांसद **श्री मिलिंद देवड़ाजी**, पूर्व कैबिनेट मंत्री **श्री राज पुरोहितजी**
और पूरे कार्यक्रम आयोजक और भारत जैन महामंडल के
अध्यक्ष **श्री सी. सी. डांगीजी** और पूरे भारत से आए गणमान्य लोगों की
उपस्थिति में, महाराष्ट्र के राज्यपाल ने जीवन ज्योत ट्रस्ट के प्रबंध ट्रस्टी
श्री हरखचंदभाई कल्याणजी सावला *(बाडावाला)* को
'जैन रत्न पुरस्कार' प्रदान किया। यह सम्मान जीवन ज्योत ट्रस्ट
की टाइमलाइन में स्वर्ण अक्षरों में अंकित किया जायेगा।

जीवन ज्योत कैंसर रिलीफ एण्ड केअर ट्रस्ट

विशेष सूचना : यह पुस्तिका आपको सप्रेम भेंट के रूप में भेजी है। इस पुस्तिका को आप अपने मित्र-परिवार को पढ़ने के लिए दीजिए, ताकि उनसे कॅन्सर पीड़ित रोगियों को आपके अनुदान व सहयोग का कवच मिल सके। आपकी इस सेवा के लिए हम आपके चिरकाल तक ऋणी रहेंगे।

स्थापना : १९८३

जीवनपथ

पथदर्शक : श्री खेतशी मालशी सावला

मार्गदर्शक : श्री बुद्धिचंद मारू

मुद्रक/स्थापक/प्रकाशक : हरखचंद सावला

संपादक : चन्द्रा शरद दवे

सह संपादक : आशा दसोंदी

-: शाखा कार्यालय :-

कोलकता कार्यालय

विनेश शेठ (गोपाल), ५, तल मजला,
खीरु प्लेस, कोलकता- ७०० ०७२. टे.: २२१७७८३४

जलगांव कार्यालय

शाह राघवजी लालजी सतरा (गुंदाला)
१०९, पोलनपेथ, जलगांव- ४२५००१
दूरध्वनि:०२५७-२२२४१५६ मो: ०९६७३३६४२९०

सांगली - कोल्हापुर

मीना जेठालाल मारू (हालापर)
मो. ७७०९९००४३३

नालासोपारा कार्यालय

१२, लक्ष्मी शोपिंग सेन्टर, राधा-कृष्णा होटेल
के बाजु में, तुलींज रोड,
नालासोपारा (ईस्ट)
खूश्बु गाला - मो. ८९२८७६५३०१

(कायदाकीय अधिकार क्षेत्र मुंबई रहेगा)

-: मुख्य कार्यालय :-

जीवन ज्योत कैंसर रिलीफ एण्ड केअर ट्रस्ट

५/६ कोंडाजी चाल, जेरबाई वाडिया रोड,
टाटा हॉस्पिटल के पास, पेट्रोल पंप के सामने, परेल,
मुंबई-१२. मो.: ९८६९२०६४००/९०७६१६९३५५

इस पुष्प की पंखुडियाँ

सम्पादक की लेखनी से... .... ४
भजन - आजा रे सांवरिया ७
व्यक्ति विशेष - पियेर ओमिदयार (१९६७) ९
पथ के दावेदार १२
काव्य १६
उम्मीद से अधिक १७
मूरखराज १९
मोक्ष सुख के मुकाबले राज सुख नगण्य २५
भयंकर कमर दर्द और स्लिपडिस्क
में ग्वारपाठा २६
प्रभावशाली नमस्कार मुद्रा २७
गृध्रसी (लंगड़ी का दर्द, सायटिका) ३०
'को-क्यू-१०' - एमा की कहानी ३०
शिल्पकार ३३
हास्य का हसगुल्ला ३४

अंक में दिए गए उपचार और सलाह का उपयोग अनुभवी की सलाह लेकर ही करें।

अब वेबसाइट पर "जीवनपथ" पढ़ सकते हैं

www.jeevanjyot.in

ट्रस्ट रजि. नं. P.T.R.E.-17259 (M) - F.C.R.A. 083780700

TI.T. EXEMPTION, DIT (E), MC/8E/80G/53(2009-11)

CSR Registration No. CSR 00002659 **Email :** jeevan_jyot@yahoo.in

ॐ अरिहंते नमो नम:
संसार के प्रत्येक जीव का हर क्षण मंगलमय हो।

संपादक की लघु लेखनी से...

प्रिय मान्यवर पाठको,

कर भला तो हो भला..

बड़े बुजुर्ग कहते हैं प्रत्येक व्यक्ति के जीवन में चार पैसे का बड़ा महत्त्व होता है। शायद इसलिए वो हमेशा कहते हैं कि - इन्सान चार पैसे कमाने के लिए मेहनत करता है, बेटा कुछ काम करोगे तो चार पैसे घर में आएंगे, आज चार पैसे होते तो कोई ऐसे न बोलता आदि-आदि ।

आख़िर क्यों चाहिए हमें ये चार पैसे। और चार ही क्यों तीन या पाँच क्यों नहीं? तीन पैसों में क्या कमी हो जायेगी या पांच से क्या बढ़ जायेगा? तो आइये समझते हैं इन चार पैसों के महत्त्व और इसके गणित को।

पहला पैसा है भोजन अर्थात् अपना तथा अपने परिवार (पत्नी और बच्चे) का भरण-पोषण करना। **दूसरा पैसा** है पिछला कर्ज़ उतारना अर्थात् अपने माता-पिता की सेवा के लिए उनके द्वारा किए गये हमारे पालन-पोषण का कर्ज़ उतारना। इसे हम अपना कर्तव्य पालन भी कह सकते हैं, क्योंकि माता-पिता ने ही हमारी परवरिश कर इस मुकाम तक पहुंचने में हमारी सहायता की है और अब उनकी सेवा करना हमारा उतरदायित्व है। **तीसरा पैसा** है आगे क़र्ज़ देना यानि कि संतान को पढ़ा-लिखा कर काबिल बनाने के लिए खर्च करना ताकि वृद्धावस्था में वे हमारा ख़्याल सही तरीके से रख सकें, ठीक उसी तरह जिस तरह हम अपने माता-पिता का रख रहे हैं। और **चौथा पैसा** कुएं में डालने के लिए अर्थात् शुभ कार्य करने के लिए दान पुण्य, सन्त सेवा, असहायों की सहायता और निष्काम सेवा करने के लिए। क्योंकि हमारे द्वारा किए गये इन्हीं शुभ कर्मों का फल हमें इस जीवन के बाद मिलने वाला है। इन कार्यों के लिए ही हमें चार पैसों की ज़रूरत पड़ती है।

यदि तीन पैसे रह गए तो हम चौथा कार्य पूरा नहीं कर सकते और पाँचवे पैसे की हमें बिल्कुल भी आवश्यकता नहीं है। यही चार पैसों का गणित है। यदि हम सभी लोग इस संसार में इसी धारणा पर चलते रहें तो हमें कुछ भी अतिरिक्त करने की जरूरत ही नहीं है..!! ■

यह जानकर बड़ा सुकून मिलता है कि आज चाहे कुछ भी हो जाए, कल सूरज फिर निकलेगा।

–: दानवीर दाताओं के लिए विशेष सूचना :–

दानवीर दाताओं द्वारा जीवन ज्योत संस्था के बैंक खाते में दान करने के बाद, जीवन ज्योत संस्था के कार्यालय पर ईमेल : **jeevan_jyot@yahoo.in** या वॉट्सअप नं. ९८६९२०६४०० पर अपना नाम, पत्ता, पॅनकार्ड नं. और दान कोर्पस या सामान्य में हैं यह जानकारी दे ।

दाता के उपरोक्त विवरण के अभाव में, संस्था को आपके दान की राशि पर ३५% कर का भुगतान करना पड़ता है। जिसके कारण कैंसरग्रस्त मरीज़ों के लिए उपलब्ध धनराशि में कमी आती है ।

भारत सरकार के वित्त मंत्रालय से विदेश से अनुदान स्वीकार करने के लिए विशेष स्वीकृति प्राप्त हुई है। अतः विदेश से दान देने के इच्छुक दानवीर दाताओंसे **FCRA** का बैंक खाता नंबर संस्था के कार्यालय से प्राप्त करने का अनुरोध है । प्राप्त जानकारी के अनुसार कोई अज्ञात व्यक्ति जीवन ज्योत संस्था के नाम का उपयोग करके डुप्लिकेट रसीद और प्रमाणपत्र पर अनुदान एकत्र कर रहा है। यदि दाताओं को कोई संदेह हो, तो अनुदान देने से पहले कृपया जीवन ज्योत संस्था के कार्यालय में संपर्क करें ।

बैंक का नाम / IFSC नं.	खाता नं.	ब्रांच
एच.डी.एफ.सी. बैंक HDFC0000357	**14731450000017**	परेल

संस्था के अनेक समाजसेवी प्रकल्पों में से कुछ प्रकल्प दाताओं के नाम पर कार्यान्वित हैं

१) श्रीमती नलिनीबेन बिपीनचंद्र मेहता : कैंसर डिटेकशन सेन्टर
२) श्रीमती चंपाबेन झुमखराम शाह : कोलोस्टोमी बैग सेन्टर
३) श्रीमती साकरबेन एल. डी. शाह (बिदड़ा) : जलाराम अन्नदान क्षेत्र
४) श्रीमती पुष्पावंती किशोरभाई भोजराज (मेराउ) : ऐम्ब्युलन्स् सेवा
५) श्रीमती नयनाबेन बिपीनभाई दाणी : वरिष्ठ नागरिक आइकार्ड सेवा
६) श्रीमान महेन्द्रभाई मणिलाल गांधी (लिंबोद्रा) : ब्लैक मोलाइसीस दवा
७) श्रीमान डुंगरशीभाई मुलजी मारू (काराघोघा) : आधुनिक उपकरण.
८) कु. साईशा - नाईशा दाणी : टॉय बैंक
९) मातुश्री खेतबाई देवराज मारु (हालापुर) : चेरी. डिस्पेन्सरी
१०) मातुश्री कांताबेन चुनीलाल गगलदास शाह (सेरीसा) : जीवदया
११) मातुश्री चंद्राबेन जयंतिलाल चत्रभुज मोदी : हल्दी दूध योजना
और मातुश्री लाछबाई हीरजी करमशी भेदा (समाघोघा)
१२) श्री हरीराम माथुराम अग्रवाल (चेम्बुर) : फल वितरण
१३) मातुश्री सुशीलाबेन कांतिलाल दाणी (हरसोल) : एनिमल ऐम्ब्युलन्स् मेईन्टनन्स
१४) मातुश्री ललिताबेन बिहारीलाल शाह (सांताक्रुझ) : ओजोन थेरेपी सेन्टर
१५) मातुश्री ताराबेन जयंतिलाल वाघाणी (माटुंगा) : जीवन ज्योत ड्रग बैंक
१६) देविका सोमचंद लालका (अमलनेर)
(स्व. कु. हंसाबेन रतनशी लोडाया) : कॉम्पिटिशन् योजना
१७) मयुरभाई महेता और जितेन्द्र पारेख : ऐम्ब्युलन्स् मेईन्टनन्स
१८) मातुश्री इन्दुमति महेन्द्र गांधी (लिंबोद्रा-बोरीवली): पेथोलोजी सेन्टर
१९) श्रीमती मंजुलाबेन नटवरलाल शाह (हरसोल) : ब्लड बैंक
२०) श्रीमान नटवरलाल बुलाखीदास शाह (हरसोल) : मेडिकल कैम्प
२१) श्रीमती नलिनीबेन रसीकभाई जादवजी शाह : ऐम्ब्युलन्स् सेवा
२२) स्व. श्री इन्दरचंद लख्खीचंद खींवसरा (धुलिया) : पस्ती योजना
२३) डॉ. रमेश मंत्री : अनाज वितरण
२४) श्रीमति उषाबेन मणिलाल गाला (कंडागरा-गोरेगाम) : जलाराम अन्नक्षेत्र
२५) श्रीमती साकरबेन प्रेमजी चेरीटेबल ट्रस्ट (वर्ली) : केमोथेरेपी विभाग

भजन

आजा रे सांवरिया

कदे आँख फड़कै, कदे आवै हिचकी,
कदे कागलो मुंडेरे ऊपर बोल रह्यो, बोल रह्यो,
आजा रे सांवरिया मन डोल रह्यो ।

थारे बिन नहीं बीते म्हारो दिन सांवरा ।
रात काटा म्हे तो तारा गिण-गिण सांवरा ।
म्हारी जिन्दगी क्यूं माटी माही रोल रह्यो ।
आजा रे सांवरिया....

सुणल्यो सांवरिया जीवन डोर थारे हाथ म ।
बोलो कांई कसर नजर आई म्हारी बात म ।
म्हारी बात न क्यूं ताखड़ी म तोल रह्यो।
आजा रे सांवरिया...

दुनिया की प्रीत तो निभाई बड़े ठाठ सै ।
नरसी क गयो कदे मिल्यो धन्ना जाट सै ।
सांची प्रीत न क्यूं सांवरा टटोल रह्यो ।
आजा रे सांवरिया....

भक्त ना परायो सांवरिया ये जाण ले ।
मैं तो थारों ही रहूँगा, बात मेरी मान ले ।
झूठ बोलूँ नाहीं सांची बात बोल रह्यो ।
आजा रे सांवरिया....

प्रेरक प्रसंग

कटु वाक्य

एक बार पैगम्बर मुहम्मद साहब तथा उनके दामाद हजरत अली साथ-साथ जा रहे थे कि रास्ते में एक आदमी मिला, जिसकी हजरत अली से पुरानी दुश्मनी थी। वह हजरत अली को देखते ही गालियाँ देने लगा। कुछ देर तक तो हजरत अली उसके दुर्वाक्यों को सुनता रहा, किन्तु पश्चात् उसने भी उसे गालियाँ देनी शुरू की। यह देख मुहम्मद साहब आगे बढ़ गये। हजरत अली ने देखा कि वे आगे निकल गये हैं। अतः वह भी झगड़ना छोड़कर उनके पास जा पहुँचा। उसने उनसे कहा, ''आप मुझे उस दुष्ट के पंजे में अकेले छोड़कर कैसे चले आये?'' मुहम्मद साहब ने जवाब दिया, ''सुनो अली, जब वह तुम्हें गालियाँ दे रहा था और तुम चुप थे, तो मैंने देखा कि दस फरिश्ते तुम्हारी रक्षा कर रहे थे और उसका जवाब देते थे । किन्तु जब तुम भी गालियों पर उतर आये, तो वे सब फरिश्ते एक-एक कर हट गये, फिर भला मैं क्यों ठहरता ? याद रखो, मनसा-वाचा-कर्मणा किसी के भी चित्त को दुःख नहीं देना चाहिए।'' ■

सेंधा नमक : आरोग्यप्रद नमक

समुद्री सफेद नमक से पहाड़ी सफेद नमक में औषधीय गुण है। सफेद समुद्र नमक जो हमलोग रोजाना रसोई में उपयोग करते हैं वह हाई ब्लडप्रशर और उससे संलग्न अनेक दर्दों को आमंत्रित करता है। कैंसर जैसी भयानक बीमारी में जब समुद्री नमक खाना वर्जित है वहाँ पर ये पहाड़ी नमक उपयोग में लिया जाता है। मरीज़ों के लाभार्थ में सेंधा नमक ५०/- रू. प्रति किलो, गाय का शुद्ध घी ६५०/- रू. प्रति किलो और कच्ची घाणी का शिंगतेल ३८०/- रू. प्रति किलो जीवन ज्योत कैंसर रिलीफ एण्ड केअर ट्रस्ट में से सभी जरूरतमंद व्यक्तिओं को मिल पायेगा। सभी जरूरतमंद व्यक्ति इसका लाभ उठायें।

जीवन ज्योत कैंसर रिलीफ एण्ड केअर ट्रस्ट

६, कोंडाजी चाल नं.५, जेरबाई वाडिया रोड, टाटा हॉस्पिटल के पास, पेट्रोल पंप के सामने, परेल, मुंबई- १२. मो.: ९८६९२०६४००/९०७६१६९३५५ (समय : ११ से ५) (रविवार बंध)

व्यक्ति विशेष

पियेर ओमिदयार (१९६७)

पियेर ओमिदयार ने अपनी ईबे नामक कंपनी से ऑनलाइन नीलामी की शुरुआत की। उन्होंने १९९५ में ऑनलाइन बाज़ार ईबे की स्थापना करके इंटरनेट कॉमर्स का नक्शा ही बदल दिया । ईबे ने व्यक्तिगत नीलामी का एक ऐसा मंच तैयार किया, जहाँ ख़रीदार और विक्रेता वस्तुओं की कीमत आपस में तय कर सकें और मोल-भाव कर सकें। ह्व

रोचक बात यह है कि जब पियेर ने ईबे की स्थापना की थी, तो उनका इरादा व्यावसायिक सफलता पाने का नहीं था। शुरू में तो यह शौकिया काम था, जिसने बाद में बहुत बड़े व्यवसाय का रूप ले लिया । उनकी सफलता का अंदाजा इसी बात से लगाया जा सकता है कि आज ईबे इंक दुनिया का सबसे बड़ा इंटरनेट बाज़ार है, जहाँ १ डॉलर के बेसबॉल कार्ड से लेकर ४.९ मिलियन डॉलर का प्राइवेट बिजनेस जेट तक सब कुछ बिकता है। ईबे शुरू करने की बदौलत आज पियेर ओमिदयार का नाम दुनिया के अमीरों की सूची में १४१वें स्थान पर है और उनके पास ६.७ अरब डॉलर की संपत्ति है।

१९६७ में जन्मे पियेर ओमिदयार ने मैसेच्युसेट्स की टफ्टस यूनिवर्सिटी में कंप्यूटर साइंस का अध्ययन किया और इसके बाद कंप्यूटर उद्योग में चले गए । पहले वे क्लेरिस कंपनी में और फिर जनरल मैजिक इंक में सॉफ्टवेयर डेवलपर का काम करने लगे। बाद में उन्होंने तीन दोस्तों के साथ मिलकर इंक डेवलपमेंट कॉरपोरेशन की स्थापना की। यह कंपनी ऐसा सॉफ्टवेयर बनाती थी, जिससे कंप्यूटर कीबोर्ड के बजाय पेन से लिखे निर्देशों को समझ लेता था। बाद में इस कंपनी का नाम बदलकर ईशॉप हो गया और इसे माइक्रोसॉफ्ट ने खरीद लिया, जिससे ओमिदयार मिलियनेअर बन गए।

कागज अपनी किस्मत से उड़ता है लेकिन पतंग अपनी काबिलियत से।

यहीं से ईबे शुरू हो गया । ईबे का विचार उनके मन में तभी से था, जब एक दिन उनकी गर्लफ्रेंड पामेला (जो अब उनकी पत्नी हैं) ने उन्हें बताया था कि उसे पेज़ डिस्पेंसर इकट्ठा करने का शौक है। पामेला इसी शौक वाले दूसरे लोगों से संपर्क करके डिस्पेंसर्स का आदान-प्रदान करना चाहती थी। इससे ओमिदयार के मन में यह विचार आया कि क्यों न नीलामी की एक ऐसी वेबसाइट बनाई जाए, जहाँ लोग आमने-सामने सामान ख़रीद बेच सकें और विचारों का आदान-प्रदान कर सकें। ओमिदयार ने बाद में कहा, "मैं एक ऐसा बाज़ार बनाना चाहता था, जहाँ सबके पास एक सी जानकारी हो।"

ओमिदयार ने ईबे को १९९५ में बड़े ही हल्के-फुल्के ढंग से शुरू किया । यह वेबसाइट के रूप में नहीं, बल्कि एक होमपेज के रूप में शुरू हुआ । उस समय ओमिदयार को भी अंदाज़ा नहीं था कि शौक शौक में किया गया उनका यह काम इतनी जल्दी इतना ज़्यादा लोकप्रिय हो जाएगा। उन्होंने बाद में न्यूयॉर्क टाइम्स को दिए एक इंटरव्यू में कहा था, "मैं ईबे से कोई बहुत बड़ा बिजनेस शुरू करने के लिए नहीं निकला था। लेकिन जब ऐसा हुआ तो मैंने अवसर का लाभ उठा लिया।" १९९६ में उन्होंने अपने बाकी सभी काम छोड़ दिए और ईबे पर ही पूरा ध्यान देने लगे। ईबे से पहले भी नीलामी की कई वेबसाइटें मौजूद थीं, लेकिन उन वेबसाइटों पर वही सामान बिकता था, जो वेबसाइट बनाने वाले चाहते थे। ईबे इस मामले में अलग था, क्योंकि यहाँ बिकने वाले सामान को कंपनी तय नहीं करती थी, बल्कि ग्राहक या इंटरनेट का प्रयोग करने वाले तय करते थे।

मई १९९८ तक ईबे पर एक करोड़ नीलामियाँ हो चुकी थीं और अगस्त १९९८ में इसके दस लाख रजिस्टर्ड यूजर्स हो गए। सितंबर १९९८ में इसका आई.पी.ओ. जारी हुआ । १८ डॉलर में जारी इसके शेयर का भाव जब ५३.५० डॉलर तक पहुँच गया, तो ईबे के स्टाफ ने डांस करके जश्न मनाया । ओमिदयार की नेट वर्थ २७.४१ करोड़ डॉलर हो गई थी।

इसे संयोग कहें या निर्णय शक्ति, ओमिदयार ने इंटरनेट पर एक बहुत ही अच्छा व्यावसायिक प्रयोग किया । सामान बेचने वाला ईबे को कमीशन देता था और

हालांकि कमीशन सिर्फ कुछ डॉलर होता था, लेकिन अगर हर दिन पाँच लाख सामान बिक रहे हों, तो मुनाफ़ा बहुत ज़्यादा हो जाता है। ओमिदयार की कंपनी मल्टी-बिलियनेअर कंपनी बन चुकी है।

सितंबर २०११ में इसके ९.९ करोड़ से अधिक सक्रिय सदस्य थे, जिसमें से ३० लाख भारत में थे । ३९ देशों में कार्यरत इस कंपनी की वेबसाइट पर औसतन हर सेकंड १,८७७ डॉलर का सामान बिकता है। यहाँ हर ४ मिनट में एक मोबाइल हैंडसेट बिकता है, हर १९ मिनट में एक लैपटॉप और हर २९ मिनट में एक डिजिटल कैमरा। २०१० में ईबे को ९.१५६ अरब डॉलर आमदनी हुई थी और १.८०१ अरब डॉलर का मुनाफा । ओमिदयार के नए काम की बदौलत एक ख़ाली बेडरूम में शुरू हुई छोटी सी कंपनी आज दिग्गज अंतर्राष्ट्रीय कंपनी में बदल चुकी है। ■

मानवता के साद को मिला हुआ प्रतिसाद

नाम	एरिया	रुपया
☆ ओमानंद इन्डस्ट्रीस	नागपुर	२०,०००/-
☆ लीलाराम छापरेवाल	वाशी	११,०००/-
☆ संतोष सावंत	कांदिवली	८,३००/-
☆ अमन खेतावत	कोलकत्ता	५,१००/-
☆ श्रीकांत महादेव कटीगर	परेल	५,०००/-
☆ हर्ष संतोष चौधरी	वडाला	२,५००/-
☆ सुधीर विष्णु परकाले	कालाचौकी	२,०००/-
☆ छाया पी. नार्वेकर	भांडुप	२,०००/-
☆ शशीकांत पंचाल		
ह. अभिषेक शशीकांत पंचाल	शिवरी	१,५००/-

कहानी

(गतांक से आगे)

पथ के दावेदार

– शरतचंद्र

अगले दिन सुमित्रा के नेतृत्व में फायर मैदान में जो सभा हुई, उसमें उपस्थिति कम थी। भाषण देने को जिन लोगों ने वचन दिया था, उनमें से भी अधिक लोग आ न सके। सभा की कार्यवाही भी देर से हुई और रोशनी का प्रबन्ध न रहने से सन्ध्या के पूर्व ही सभा समाप्त कर दी गई। सुमित्रा के भाषण के अतिरिक्त सभा में और उल्लेखनीय कुछ भी न हो सका। लेकिन इसका अर्थ यह नहीं था कि पथ के दावेदारों के इस प्रथम प्रयत्न को व्यर्थ कह दिया जाए। मजदूरों में इस बात को फैलने में जिस प्रकार देर नहीं हुई, उसी प्रकार मिल और कारखानों के मालिकों के कानों तक उक्त बातों के पहुँचने में भी विलम्ब नहीं हुआ। चारों ओर यह बात फैल गई कि एक बंगाली महिला समस्त पृथ्वी का भ्रमण करती हुई बर्मा में आई है, उनमें जैसी सुन्दरता है, वैसी शक्ति भी है । किसी की मजाल नहीं जो उनके कामों में बाधा उपस्थित कर सके। साहबों का कान पकड़कर वे किस प्रकार मजदूरों के लिए सब प्रकार की सुविधाएँ उपलब्ध करा लेंगी, और उन लोगों की मजदूरी दोगुनी करा देंगी इन बातों को उन्होंने स्पष्ट रूप से ही कहा है। जिन लोगों को इस सभा की खबर थी, और जो लोग उस दिन उनका भाषण नहीं सुन पाए, वे आगामी शनिवार को सभा में अवश्य भाग लेंगे।

बीस-पच्चीस कोस में जितने कारखाने थे, उनमें यह खबर दावाग्नि की भांति फैल गई।

सुमित्रा को बहुतों ने अभी तक देखा नहीं है, लेकिन उसके रूप और शक्ति की ख्याति जब उन लोगों तक पहुँची तब अशिक्षित मजदूरों में भी सहसा एक जागृति सी दिखाई पड़ने लगी। यह निश्चय हो गया कि एक दिन का नागा करके शनिवार के दिन, फायर मैदान में एक-एक मजदूर उपस्थित होगा। उसकी वाणी

और उपदेशों में, यदि ऐसा कोई पारस पत्थर हो, जिससे गरीब मजदूरों का दुखी जीवन रातों-रात एकाएक आतिशबाजी के तमाशे की भांति चमक उठे तो फिर जिस तरह हो सके, उस दुर्लभ वस्तु को उन्हें प्राप्त कर लेना चाहिए।

उस दिन भाषणकर्ताओं के अभाव में अपूर्व को भी बाध्य होकर दो-चार बातें कहनी पड़ी थीं। बोलने की आदत तो नहीं थी, और जो कुछ कहा भी, उसे भी ठीक तरह से कह न सका। इसके लिए वह मन ही मन बहुत लज्जित हुआ। लेकिन आज एकाएक खबर मिली कि उस दिन की सभा निष्फल नहीं हुई, बल्कि उसका फल यह हुआ कि आगामी सभा में सभी कारखानों में काम बन्द करके कारीगरों-मजदूरों के दलों ने उपस्थित होने का संकल्प किया है तब गर्व तथा आत्मप्रशंसा के आनन्द से उसका हृदय रह-रहकर फूल उठने लगा। उस दिन वह भाषण अच्छी तरह से न दे सका था, लेकिन प्रशंसा के साथ आगामी सभा में भाषण करने का निमन्त्रण पाकर वह चंचल हो उठा। दोपहर को टिफिन पर उसने रामदास से इस बात को प्रकट कर दिया। एक दिन अपूर्व के लिए उसने भारती का अपमान किया था, उस दिन से भारती की बात इस व्यक्ति से कहने में अपूर्व को संकोच होता था। इन दिनों अपूर्व उस गृहहीन लड़की से चुपके-चुपके, जीवन में कितना बड़ा काव्य, कितना बड़ा सुख-दुख का इतिहास प्रस्तुत कर चुका था, इसकी उसे कोई सूचना न थी। आज पुलक और रोमांच की अधिकता से सारी बातें अपूर्व ने प्रकट कर दीं । भारती, सुमित्रा, डॉक्टर बाबू, नवतारा यहां तक कि उस मतवाले का उल्लेख कर, वह अपने पथ के दावेदार के कार्यक्रमों तथा उद्देश्यों का वर्णन करते हुए, उस दिन लाइन वाले कमरे में अभियान का विवरण जब एक-एक कर देने लगा, तब तक भी रामदास ने कोई प्रश्न नहीं किया। एक दिन देश के लिए इस व्यक्ति को जेल जाना पड़ा है, बेंत की मार पड़ी है, सम्भवतः और जाने क्या-क्या दुख भोगना पड़ा है। केवल एक दिन के अतिरिक्त और किसी दिन कोई विवरण उसने रामदास के मुँह से नहीं सुना। आज सुमित्रा के पत्र को रामदास के सम्मुख रखकर, अपने

को पथ के दावेदार का एक विशिष्ट सदस्य कहकर उसने देश के काम के लिए नियोजित अपने जीवन का वर्णन किया।

तलवलकर पत्र पढ़कर बोला- ''बाबूजी, यह सब बातें आपने मुझसे पहले कभी नहीं कहीं ?''

''कहने से क्या आप हमारा साथ देते?''

तलवलकर बोला- ''ऐसी बातें क्यों कर रहे हैं? मुझको तो आपने सहयोग देने के लिए निमन्त्रित किया नहीं।''

उसके कण्ठ-स्वर में एक आहत अभिमान की झंकार अत्यंत स्पष्ट होकर अपूर्व के कानों में बज उठी, वह तुरन्त बोला- ''इसका कारण है, रामदास बाबू! इन कामों में कितना बड़ा दायित्व है और कितनी शंका- यह आप जानते ही हैं। आप विवाहित हैं, एक लड़की के पिता इसी से इस आग में आपको बुलाना मैंने नहीं चाहा ।''

''गृहस्थों को क्या देश सेवा का अधिकार नहीं? जन्मभूमि क्या केवल आप ही लोगों की है?''

अपूर्व लज्जित होकर बोला- ''मैंने तो ऐसा नहीं कहा- मैंने तो केवल यह कहा कि दूसरी जगह आपके दायित्व अधिक हैं, इसलिए विदेश में इतनी बड़ी विपत्ति में पड़ना उचित नहीं।''

''सम्भवतः यही हो, लेकिन पराधीन देश की सेवा करने को तो विपत्ति नहीं कहते अपूर्व बाबू! हिन्दुओं में विवाह एक धर्म है, मातृ-भूमि की सेवा उससे बड़ा धर्म है। एक धर्म दूसरे में बाधा देगा, यदि यह मैं जानता तो कभी विवाह न करता।''

उनके मुँह की ओर देखकर अपूर्व ने प्रतिवाद नहीं किया, मौन हो गया। लेकिन इस युक्ति का उसने समर्थन नहीं किया। एक दिन स्वदेश के कार्य में इस व्यक्ति ने अनेक कष्ट सहे हैं। आज भी उसके अन्तर का तेज एकदम बुझा नहीं है, सामान्य प्रसंग से ही वह एकाएक भभक उठा है इस बात का विचार मन में आते ही अपूर्व श्रद्धा से झुक गया। लेकिन इससे अधिक उससे आशा भी नहीं थी। बुलाने से ही

वह स्त्री पुत्री की माया छोड़कर पथ के दावेदार का सदस्य बन जाएगा ऐसा उसे विश्वास नहीं हुआ और न उसने करना ही चाहा। स्वदेश सेवा के अधिकार की उसकी स्पर्धा इन कई दिनों में बहुत ही ऊँची हो गई थी। सहसा इस प्रसंग को बन्द करते हुए उसने आगामी सभा के कारण और उद्देश्यों का बयान न करते हुए, मित्र के निकट सरल कण्ठ से ही व्यक्त किया कि केवल उसी एक दिन को छोड़कर जीवन में और कभी उसने भाषण नहीं दिया। सुमित्रा के निमन्त्रण की उपेक्षा वह नहीं कर सकता, लेकिन एक ही बात बहुतों को सुना सके, ऐसी भाषा का अभ्यास उसे न था।

तलवलकर ने पूछा - ''तो फिर क्या कीजिएगा?''

अपूर्व ने कहा- ''जीवन में कारखाना देखने का मुझको केवल एक ही अवसर मिला था जिस पर भाषण किया जा सकता है। उक्त कारखाने के अधिकांश मजदूर पशुवत जीवनयापन करते हैं यह मैं स्वयं अनुभव कर आया हूँ, लेकिन न जाने क्यों, उस विषय में मैं कुछ तो जानता नहीं।''

रामदास ने हंसते हुए कहा- ''फिर भी क्या आपको बोलना जरूरी है? न बोलें तो क्या हानि है?''

अपूर्व मौन रहा।

रामदास बोला - ''लेकिन मैं इन लोगों की बातें जानता हूँ।''

''कैसे जाना?''

''इन लोगों के बीच मैं बहुत दिनों तक रह चुका हूँ अपूर्व बाबू! मेरी नौकरी के प्रमाण पत्रों को एक बार देखने से ही समझेंगे कि देश में मैं कल-कारखाना, कुली-मजदूरों को ही लेकर समय बिताता रहा हूँ। यदि आज्ञा हो तो वह करुण कहानी भी आपको सुना सकता हूँ। वास्तव में इन लोगों को देखे बिना देश की वास्तविक स्थिति का ज्ञान ही नहीं हो सकता बाबूजी!''

अपूर्व ने कहा- ''सुमित्रा भी ठीक यही बात कहती है।''

"बिना कहे उपाय नहीं है! और जानते हैं इसीलिए तो वे पथ के दावेदारों की अध्यक्षा हैं। बाबूजी, आत्मत्याग का आरम्भ यहीं से है, देश की नींव भी निर्भर होती है। उनकी पूरी जानकारी रहने से आपका सारा उद्यम, सारी इच्छाएँ मरुभूमि की भांति दो दिन में सूख जाएँगी।"

ये बातें अपूर्व के लिए नई न थीं, लेकिन रामदास के हृदय से वे मानो सशब्द उठकर आज उसके हृदय के ऊपर तीक्ष्ण आघात करने लगीं। रामदास और न जाने क्या कहने जा रहा था, लेकिन अकस्मात पर्दा हटाकर साहब के प्रवेश करते ही दोनों चकित होकर खड़े हो गए। साहब ने अपूर्व को लक्ष्य करते हुए कहा- "मैं जा रहा हूँ। आपकी मेज पर एक पत्र रख आया हूँ। ले लीजिएगा ।" *(क्रमशः)*

काव्य

कहाँ तो शब्दों से,
में कविता बनाना चाहता था,
और कहाँ शब्दों से
मैं जंगलों का महाजंगली शोर बना बैठा।
कहाँ तो शब्दों में
समा देना चाहता था गर्जनायें
जुल्म और आतंक के विरुद्ध,
और कहाँ गाने लगे शब्द मेरे,
फिल्मी टाइप गानों की पंक्तियाँ।
यह सब तो चाहा ही नहीं था कभी,
सोचा भी नहीं था कि हो जाऊँ में
चारण भाट-चमचा-
या चपरासी उनका ।
शब्दों ने ही सिखाया,
समझाया सच बोलना
या सच जैसा ही बोलना और आखिर
हाल हुआ वही,
सच बोलने का दुष्परिणाम भोगना
पड़ा यही,
कि पहुँच गया मैं कहीं से कहीं।
अब न घर का रहा न घाट का
व ही किसी के काम का,
और जब भी चाहा कभी बोलना
तो पड़ गया मुझे सोचना
कि सच बोलना चाहिए या
चमचागिरी के लुभावने शब्द।

कहानी

उम्मीद से अधिक

सीता ने गीता से कहा कि आज तेरे मम्मी-पापा ने मुझसे कहा है कि वे तेरी शादी के लिये दूल्हा ढूंढ रहे हैं। अब उन्होंने मेरी यह ड्यूटी लगाई है कि मैं तुझसे बात करके तेरी पसंद-नापसंद के बारे में उन्हें बताऊँ । जरा जल्दी से अब यह बता कि तुझको किस तरह का लड़का पसंद है? गीता ने बड़े ही नखरे से जवाब देते हुए कहा कि कुछ खास नहीं, बस लड़के की अच्छी बढ़िया नौकरी हो ताकि मेरे खर्चे से उसे किसी किस्म की टेंशन न हो। लड़के का स्वभाव ऐसा हो कि मेरे हर प्रकार के नखरे को शांति से सहन कर सके। अपनी हर जिम्मेदारी को ठीक से निभाना जानता हो और मुझे रानी बनाकर रखे। मेरे खाने-पीने से लेकर मेरी हर ख्वाहिश का बराबर ख्याल रखे। समय-समय पर अच्छी बातों के साथ चुटकले, कविता आदि सुना सके। बढ़िया स्वादिष्ट खाना बनाने के साथ घर के सभी काम जानता हो। मैं चाहे कुछ भी करूँ, किसी किस्म की रोक-टोक नहीं होनी चाहिए। हर सुख-दुःख में सिर्फ मेरा साथ दे । मुझसे कभी कोई बात न छिपाये । उसमें कोई बुरी आदत ना हो। जब भी मेरे मायके से कोई भी मेहमान आए तो सारे काम छोड़कर सिर्फ उनकी सेवा करे।

सीता ने गीता को रोकते हुए कहा कि तुझे नहीं लगता कि तू जरूरत से अधिक ही आशा कर रही है। वैसे तो यह तेरा निजी मामला है, लेकिन जहां तक मैंने जिंदगी को समझा और जाना है, यही समझ आया है कि अपनी हैसियत और सीमा से अधिक की आशा करना, मूर्खता से बढ़कर कुछ नहीं होता। इस बात से तो तू भी सहमत होगी कि मन को असली खुशी धन-दौलत से नहीं मन की शांति से ही मिलती है। बड़े-बड़े ख्वाब देखकर या बड़े लक्ष्य तय करके हम अपने साथ दूसरों के लिये भी तनाव पैदा कर देते हैं। जहां तक खुशहाल शादीशुदा जीवन की बात है तो अपना परिवार ही संसार में सबसे महत्त्वपूर्ण होता है। जिस परिवार में अच्छा तालमेल और एकता होती है, वह धीरे-धीरे हर तरह से समृद्ध हो ही जाता है । सीता के परामर्श पर गंभीरता से विचार करते हुए जौली अंकल बुजुर्गों की उस बात को याद कर रहे हैं, जिसमें वे कहा करते थे कि परिवार में प्यार का आधार उम्मीद से अधिक ख्वाहिशें रखकर नहीं, बल्कि आपसी संतुलन से ही पनपता है। ■

बिपीनभाई दाणी (हरसोल) एकता परिवार (I.G.) माटुंगा की प्रेरणा से

दाताओं के नाम	एरिया	योजना	रुपया
☛ स्व. मीतेष महेन्द्र शाह के आत्मश्रेयार्थे			
ह. कुसुमबेन महेन्द्र शाह (हरसोल)	बोरीवली	जीवदया	५,०००/-
☛ प्रविणचंद्र शाह की वार्षिक पुण्यतिथि पर			
ह. भारती पी. शाह परिवार	एहमदाबाद	जीवदया	२,५००/-
☛ स्व. अरविंदभाई वल्लभदास सोनेचा के आत्मश्रेयार्थे			
ह. हंसाबेन अरविंदभाई सोनेचा परिवार	कांदिवली	दवाइयाँ	२,०००/-
☛ स्व. महेन्द्रभाई मणिलाल गांधी (लिंबोद्रा) के आत्मश्रेयार्थे			
ह. ईन्दुबेन, अल्पेश, संजय गांधी परिवार	बोरीवली	जीवदया	१,२००/-
☛ स्व. नटवरलाल बुलाखीदास शाह (हरसोल) के आत्मश्रेयार्थे			
ह. मंजुलाबेन नटवरलाल शाह परिवार	कांदिवली	जीवदया	१,०००/-
☛ स्व. कमलाबेन और स्व. कांतिलाल नगीनदास शाह (हरसोल) के आत्मश्रेयार्थे			
ह. कांतिलाल नगीनदास शाह परिवार	भायंदर	दवाईयाँ	१,०००/-
☛ ईन्दीराबेन चंपकलाल सोनी	एहमदाबाद	अन्नदान	१,०००/-
☛ कपिलाबेन रमणलाल चोक्सी	एहमदाबाद	अन्नदान	१,०००/-
☛ स्व. कमलाबेन और स्व. बेचरदास दोशी के आत्मश्रेयार्थे			
ह. दिलीप बी. दोशी	मुलुंड	दवाइयाँ	५००/-
☛ स्व. शारदाबेन और स्व. चिमनलाल साकळचंद शाह (उवारसद) के आत्मश्रेयार्थे			
ह. हेमा प्रदीप शाह	पूना	जीवदया	५००/-
☛ छाया हसु महेता	बोईसर	जीवदया	५००/-

सादगी अगर हो लफ़्ज़ों में तो इज़्ज़त बेपनाह और बेमिसाल दोस्त मिल ही जाते हैं।

कहानी

मूरखराज

(गतांक से आगे)

आखिर वह दिन आया कि निश्चय के मुताबिक तीनों चर उस निश्चित जगह आकर जमा हो गए। हर एक फिर अपनी बीती सुनाने लगा। पहला जिसने बलजीत फौजी का जिम्मा लिया था, कहने लगा- "भाई मेरा काम तो खूब मजे में चल रहा है। कल ही बलजीत अपने बाप के घर पहुँच जाएगा, फिर काम हुआ समझो।"

औरों ने पूछा- "यह किस तरह किया?"

वह बोला- "पहले तो मैंने बलजीत के अन्दर हिम्मत भरी। हिम्मत के साथ-साथ घमण्ड। आखिर इतना हौसला उसमें हो आया कि वह अपने राजा से कहने लगा, "आपको मैं सारी दुनिया फतह करके दे सकता हूँ।"

राजा ने इस पर उसे सिपहसालार बना दिया। कहा- "अच्छा हिन्दुस्तान का मोरचा लो और जाकर वहां के राजा को शिकस्त दो।

तब दोनों की फौजें मोरचे पर मिलीं। पर इधर मैंने क्या किया कि बलजीत की छावनी की तमाम बारूद नम कर दी और हिन्दुस्तानी फौज के लिए मैंने रात-ही-रात में फूंस के अनगिनत सिपाही बना दिए।

जब सुबह सवेरे बलजीत की फौज ने उन फूंस के सिपाहियों को अपना घेरा डाले देखा तो वह घबरा गई। बलजीत ने गोली चलाने का हुक्म दिया लेकिन तोप और बन्दूक कहां चल सकती थीं, इसलिए बलजीत के सिपाही डर के मारे भेड़ों की तरह भाग गए। भागते समय उन्हें पकड़-पकड़कर हिन्दुस्तान के राजा ने बहुत से सिपाहियों को मौत के घाट उतार दिया। बलजीत की बड़ी बदनामी हुई। इसलिए उसका पूरा इलाका छिन गया।"

"अब बलजीत का हालचाल बताओ?" दोनों चर बोले।

"कल बलजीत को फांसी पर चढ़ा देने की बात है। बस एक काम बाकी रह गया है। जाकर उसे बस जेल से छुड़ा देना है कि भागकर वह अपने घर जा पहुँचे।

तुममें से जिसे मदद की जरूरत हो, कल में मदद को पहुँच सकता हूँ, जल्दी ही इस काम को निबटाकर आता हूँ।''

उसके बाद दूसरा चर, जिसने धनवीर को हाथ में लिया था, अपनी बीती सुनाने में लग गया।

वह बोला- ''मुझे तो भाई किसी की मदद की जरूरत नहीं है । मेरा भी काम कामयाबी के साथ आगे बढ़ रहा है । धनवीर को काबू में लाने में एक हफ्ता भी नहीं लगा। पहले तो खूब आराम देकर मैंने उसे फुलाकर मोटा कर दिया। फिर तो उसका लालच इतना बढ़ गया कि जो दिखाई देता उसी को रुपये से खरीद लेने की तबियत होने लगी।

अब दुनिया भर का माल खरीदकर उसने भर लिया है। रुपया सारा उसमें गला जा रहा है। कर्जा उसके गले में पत्थर की तरह बंध गया है । ऐसा वह उसके अन्दर उलझता जा रहा है कि छुटकारा नहीं हो सकता।

एक हफ्ते के अन्दर ही सारा रुपयां उसे चुकाना पड़ेगा। उससे पहले ही जो माल उसने जमा किया है, वो सारा मैंने सत्यानाश करके रख दिया है। वह इतना कर्ज चुका नहीं सकेगा, फिर लाचार होकर उसे अपने पिता के घर भागना पड़ेगा । दूसरा कोई रास्ता नहीं है।''

इसके बाद वे दोनों प्यारे मूरख वाले चर से उसकी कहानी पूछने लगे, उन्होंने उस घर से पूछा- ''क्यों दोस्त, अब तुम ही बताओ, तुम्हारा क्या हालचाल है? कहां तक काम हो चुका है?''

वह बोला- ''भाई, मेरा मामला तो ठीक रास्ते पर नहीं आ रहा है। बात कुछ बन ही नहीं रही है। पहले तो मैंने उसके दूध के कटोरे में कुछ मिला दिया कि पेट में उसके पीड़ा हो जाए। उसके बाद जाकर पीट-पीटकर खेत की धरती को ऐसा कर दिया कि पत्थर । अगर जोते तो वह जुते नहीं। मैंने सोचा था कि वह अब से क्या जोतेगा, मगर मूरख जो अजब आदमी है। देखता क्या हूँ कि वह तो हल

लिए चला आ रहा है। जाकर जमीन को गोड़ना उसने शुरू कर दिया। पेट की पीड़ा से कराह जाता था । लेकिन उसने हल नहीं छोड़ा।

मैंने फिर क्या किया कि हल तोड़कर रख दिया, मगर वह मूरख गया और घर जाकर दूसरा हल निकाल लाया और लगा फिर धरती को गोड़ने । मैं फिर धरती के अन्दर घुस गया और हल के फल को पकड़ लिया। मगर पकड़े कैसे रहता? हल पर अपना सारा बोझ देकर वह चलाने लगा। हल की धार पैनी थी और मेरा हाथ भी जख्मी हो गया।

फिर उसने सारा खेत जोत डाला । बस अब तो जरा-सी किनारी बची रह गई। भाई, आकर मेरी मदद करो, क्योंकि उस पर काबू नहीं पाया तो हमारी सारी मेहनत बेकार हो जाएगी। वह मूरख बाज न आया और ऐसे ही धरती के साथ कामयाब होता चला गया, तो उसके भाइयों को भूख की नौबत नहीं आएगी और पेट भरने के लायक वह अकेला पैदा कर लेगा।''

सुनकर दोनों चर खामोश हो गए।

बलजीत वाले चर ने कहा- ''अच्छी बात है । मैं कल तुम्हारी सहायता को आ जाऊँगा।''

इसके बाद तीनों चर अपने-अपने काम पर चले गए।

प्यारे ने खेती करने के लिए सारी धरती गोड़ डाली थी । बस थोड़ी-बहुत जगह बची रह गई थी। उसी को पूरा करने यह आ जुटा । पेट में पीड़ा हो रही थी, मगर खेत का काम तो होना ही चाहिए।

यह सोचकर उसने बैल जोता, हल को घुमाया और गुड़ाई करना आरम्भ कर दिया। उसने पूरी एक लीक कर दी। दूसरी पर लौट रहा था तो हल फिसलता हुआ मालूम पड़ा। जैसे अन्दर किसी जड़ में अटक गया हो।

असल में धरती के अन्दर चर छिपा हुआ बैठा था । उसी के अन्दर वह हल अटक गया था। उसने ही हल की पेड़ पर अपनी टांगें कसकर लिपटा ली थीं और उसे चलने से रोक दिया था।

प्यारे ने सोचा यह क्या अजीब बात है । कल तो यहां जड़-वड़ नहीं थी, फिर भी यह जड़ यहां आई तो कहां से आई?

इसलिए झुककर गहराई तक हाथ देकर धरती के अन्दर उसने टटोला। अन्दर कुछ गीली गीली और चिकनी चीज छुपी हुई उसे महसूस हुई। प्यारे ने उस चीज़ को पकड़कर बाहर खींच लिया। जड़ की तरह की कोई काली वस्तु थी और कुलबुला रही थी, असल में वह चर का शरीर था।

देखकर प्यारे बोला- ''कैसी गन्ध है।'' इतना कहकर हाथ ऊपर उठाया कि उस चीज को हल से दे मारा।

लेकिन यह देखकर वह चर चीख पड़ा, बोला- ''मुझे मत मारो । जो बताओ में वही तुम्हारे लिए करूँगा।''

''तुम क्या कर सकते हो?''

''जो भी तुम कहो।''

प्यारा सोच में पड़ गया कि क्या बताए? वह खड़ा खड़ा अपना सिर खुजाने लगा और सोचने लगा।

फिर जल्दी से बोला- ''मेरे पेट में बहुत जोरों का दर्द हो रहा है, तुम उसे अच्छा कर सकते हो?''

''जरूर कर सकता हूँ।''

''तो फिर जल्दी से करो।''

यह सुनकर वह चर वहीं धरती के अन्दर घुस गया। वहां पंजों से खरोंच-खरोंच आस-पास टटोला, आखिर एक जड़ी खींचकर बाहर लाया । जड़ी में से उसकी, तीन शाख निकल रही थीं, लाकर प्यारे के हाथ में दे दी।

वह बोला- ''यह देखिये इन जड़ी में से जो भी एक जड़ी खा लेगा, उसके सारे रोग दूर हो जायेंगे।''

प्यारे ने जड़ी को हाथ में ले लिया।

फिर उसने तीनों जड़ी को अलग-अलग कर दिया, और एक उनमें से उसने खा ली, तुरन्त पेट का दर्द अच्छा हो गया।

इसके बाद चर ने कहा- ''मुझे अब छोड़ दीजिए । मैं अब धरती से होकर सीधा पाताल में पहुँच जाऊँगा, फिर नहीं लौटूँगा।''

प्यारे ने कहा- ''अच्छी बात है, अब तुम यहां से तुरन्त चले जाओ। भगवान तुम्हारा भला करे।''

भगवान का नाम प्यारे के मुँह से निकला था कि जैसे जल में कंकड़ गिरकर गायब हो जाए, वैसे ही वह चर धरती में गिरकर गायब हो गया । वहां निशानी में बस एक सूराख रह गया।

प्यारे ने बाकी बची दो जड़ी अपनी टोपी के अन्दर रख लीं; फिर अपने हल में लग गया। खेत की बची किनार उसने पूरी कर दी। फिर हल लेकर अपने घर लौट गया।

उसने बैलों को खोलकर बांध दिया। फिर घर के अन्दर आया। वहां आकर क्या देखता है कि बड़ा भाई बलजीत और उसकी बीवी जीमने थाली पर बैठे हैं। बलजीत का इलाका जायदाद सब जब्त हो गया था। जैसे-तैसे वह जेलखाने से निकल भागकर यहां आया था।

प्यारे को देखकर बलजीत ने कहा- ''प्यारे हम तुम लोगों के यहां रहने आए हैं। दूसरा बन्दोबस्त जब तक हो, तब तक मैं और मेरी बीवी तुम्हारे ही भरोसे रहेंगे। जरा ख्याल रखना।''

प्यारे ने प्रसन्नता के साथ कहा- ''अच्छी बात है! जब तक दिल चाहे खुशी के साथ यहां रहो।''

फिर जैसे ही हाथ मुँह धोकर प्यारे उनके साथ खाना खाने बैठा तो बलजीत की बीवी को यह सब अच्छा नहीं लगा । उसे प्यारे के कपड़ों के अन्दर से बहुत तेज बदबू आ रही थी।

वह अपने पति से बोली- ''ऐसे गंवार देहाती के साथ बैठकर मुझसे खाना नहीं खाया जाता।''

बलजीत ने कहा- ''प्यारे, तुम्हारी भाभी कहती है कि तुम्हारे अन्दर से बदबू आ रही है, तुम बाहर जाकर खा लो।''

प्यारे ने कहा- ''अच्छी बात है। वैसे भी रात में मुझे बैलों की सानी-पानी को बाहर ही रहना था।''

उसने रोटी ली और दोहर कन्धे पर डालकर वह बाहर आकर ढोरों के सानी-पानी के काम में लग गया। *(क्रमशः)* ■

जलाराम अन्नदानक्षेत्र

नाम	एरिया	रुपया
❈ सुमित्रा एस. शेट्टी	जोगेश्वरी	७,०००/-
❈ सदाशिव वागले की पुण्यतिथि नि. ह. महेश्वर एस. वागले		७,०००/-
❈ सुशीलादेवी गुप्ता	शिवरी	४,०००/-

कर्करोग की भयानकता

दाताओं के नाम	एरिया	रुपए
❈ स्मिता समीर घराट	दादर	१२,०००/-
❈ डॉ. अंजली काले	रत्नागीरी	३,०००/-
❈ शीतल रंजन लोखंडे	वर्ली	३,०००/-
❈ साहिल पंदारीनाथ गवाणकर	परेल	२,०००/-
❈ रविन्द्र पोरे	भायखला	२,०००/-
❈ खुशांत भावेश ओझा	वडाला	२,०००/-
❈ अरविंद कुमार जैन	दिल्ही	१,१००/-

मोक्ष सुख के मुकाबले राज सुख नगण्य

एक समय की बात है। उज्जैन के राजा विक्रमादित्य के राज्य में एक सदाचारी और संतोषी ब्राह्मण निवास करता था। वह बहुत निर्धन था। स्त्री की प्रेरणा से वह धन प्राप्ति के लिए अपने घर से निकला। मार्ग में जाते हुए उसकी भेंट एक महात्मा से हुई।

महात्मा ने ब्राह्मण को चिंतित दशा में देखा तो उससे उसके दुखों का कारण पूछा और उन सभी कष्टों को दूर कराने का आश्वासन दिया। महात्मा ने विक्रमादित्य को पत्र लिखा, ''तुम्हारी इच्छापूर्ति का अब समय आ गया है । अपना राज्य इस ब्राह्मण को देकर यहाँ चले आओ।'' वह पत्र विक्रमादित्य ने पढ़ा।

पत्र पढ़कर राजा को बड़ी प्रसन्नता हुई। वे ब्राह्मण को राज्य सौंपने की तैयारी करने लगे। ब्राह्मण ने जब राजा विक्रमादित्य को राज्य के सुखों का त्याग करने के लिए इतना उत्सुक और अत्यन्त आनंद-विभोर देखा तो वह सोचने लगा कि जब राजा ही राजसुख को ठोकर मारकर योगी के पास जाने में विशेष आनंद अनुभव कर रहे हैं तो योगी के पास अवश्य ही कोई राज्य से भी बड़ा सुख है।

यह सोचकर उसने राजा से कहा- ''महाराज मैं अभी महात्माजी के पास पुनः जा रहा हूँ और लौटकर राजपाट संभालूँगा।''

वह ब्राह्मण योगी के पास पहुँचकर बोला- ''भगवन्! राजा तो राज्य त्यागकर आपके पास आने के लिए बहुत ही प्रसन्न और उतावले हैं। इससे जान पड़ता है कि आपके पास राज्य से भी बड़ी और महत्वपूर्ण कोई वस्तु है। मुझे भी आप वही दीजिए।''

महात्मा ने आश्चर्यचकित और प्रसन्न होकर उसे पूर्ण योगक्रिया बताई, जिसके माध्यम से वह ब्राह्मण पूर्ण तपस्वी हो गया। उसे मोक्ष की प्राप्ति हो गई। अतः कहा जा रहा है कि मोक्ष सुख के आगे राज सुख नितान्त तुच्छ होता है। ■

चिकित्सा

भयंकर कमर दर्द और स्लिपडिस्क (Slip Disc) में ग्वारपाठा

ग्वारपाठा (घृत कुमारी) लाकर छिलका उतार लें। गुदा को कुचल कर बारीक पीस लें । अन्दाज से उसमें आटा मिला लें। फिर देशी घी में भूनकर खांड मिलाकर हलवा बना ले और २०-२० ग्राम के लड्डू बना लें । आवश्यकतानुसार तीन चार सप्ताह तक नित्य सुबह खाली पेट एक लड्डू खाते रहने से भयंकर कमर दर्द समाप्त हो जाता है।

विशेष – ग्वारपाठा के प्रयोग के पूर्व उसका शोधन कर ले।

ग्वारपाठा को शुद्ध करने की विधि – एक पात्र में गाय के गोबर के कण्डे (छाणे) की राख बिछा लें। उस पर ग्वारपाठा के टुकड़े रख दें। उसके ऊपर भी राख बिछा दें । चार-छः घंटे रखने के पश्चात् पानी से धोकर राख साफ कर लें। इस तरह ग्वारपाठा को शोधन हो जाएगा। फिर शुद्ध किए गए ग्वारपाठा के गूदे को कूट पीसकर बारीक कर आटे के साथ भूनकर लड्डू बना ले और प्रयोग करें।

■

अवयव दान, नेत्रदान और त्वचादान

जीवन के बाद भी एक सत्कार्य अर्थात नेत्रदान और अवयव दान । आज के वैज्ञानिक युग में मृत्यु के पश्चात शरीर के कुछ विभिन्न अंगों से यदि किसी अन्य व्यक्ति को जीवनदान देना संभव हो तो उसे जलाना, नष्ट नहीं करना चाहिए, उसे दान करना चाहिए। मृत्यु के बाद भी सत्कार्य संभव है। अतः जीवन पश्चात का अवयव दान एक उत्तम दान हो सकता है।

प्रभावशाली नमस्कार मुद्रा

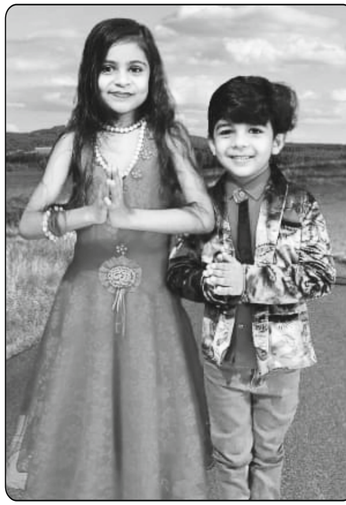

(गतांक से आगे)

दोनों हाथों की हथेलियों की पांचों अंगुलियों से कोहनी तक के भाग को स्पर्श करने से नमस्कार मुद्रा बनती है। हथेली में सुजोक एवं हैण्ड रिफ्लेक्सोलॉजी एक्यूप्रेशर के सिद्धान्तानुसार शरीर के प्रत्येक भाग के प्रतिवेदन बिन्दु होते हैं और जब दोनों हथेलियों को मिलाते हैं तो हथेली के चारों तरफ का आभा मंडल संतुलित होने लगता है, जिससे सभी अंगों में प्राण ऊर्जा का प्रवाह संतुलित होने लगता है, आवेग शांत होने लगते हैं। मन की चंचलता शांत होती है, श्वास की गति मंद हो जाती है। जिससे अहं का विसर्जन एवं क्रोध शांत होता है। सकारात्मक सोच विकसित होने लगती है। इसी कारण हमारे यहाँ एक लोकोक्तिहै- ''हाथ जोड़ो गुस्सा छोड़ो'' अर्थात् हाथ जोड़कर क्रोध नहीं किया जा सकता।

दोनों हाथों को मिलाने से चन्द्र और सूर्य स्वर सम होने लगता है और सुषुन्ना स्वर चलने लगता है। सिद्धान्तानुसार फलतः वात, कफ और पित्त आदि विकारों पर अंकुश लगने लगता है। आयुर्वेद के अनुसार वात, कफ एवं पित्त के असंतुलन से ही रोगों की उत्पति होती हैं।

ज्योतिष में रेखा विज्ञान के अनुसार हथेली में व्यक्तिके सम्पूर्ण ग्रहों की स्थिति होती है। हस्त रेखा विशेषज्ञ हथेली का आकार एवं विभिन्न रेखाओं की स्थिति देखकर मनुष्य के जीवन में घटित होने वाली घटनाओं को बताने में सक्षम होते हैं। जब दोनों हथेलियों को आपस में मिलाते हैं तो अशुभ ग्रहों का प्रभाव कम होने लगता है। हथेली की अंगुलियों में तरह-तरह के रत्न एवं विशिष्ट पत्थर अंगूठियों

में पहनने से रत्न चिकित्सा के सिद्धान्तानुसार उन रत्नों की तरंगों का प्रभाव सभी स्तर पर पड़ने लगता है। जिससे न केवल रोगों का उपचार होता है अपितु प्रतिकूल ग्रह-नक्षत्रों की स्थिति को भी नियन्त्रित किया जा सकता है।

हथेली की पाँचों अंगुलियाँ पंच महाभूत तत्त्वों (पृथ्वी, जल, अग्नि, वायु और आकाश) का प्रतिनिधित्व करती है । अतः नमस्कार मुद्रा से बायें दायें पंच तत्त्वों का संतुलन होने लगता है। पंच तत्त्वों का असंतुलन ही अधिकांश रोगों का मूल कारण होता है। मुद्रा-साधक हाथों की अंगुलियों और अंगूठों को अलग-अलग ढंग से आपस में निश्चित समय तक स्पर्श कर पंच महाभूत तत्त्वों को संतुलित कर विभिन्न रोगों का उपचार करते हैं।

धातु विशेषज्ञ अलग-अलग ग्रहों की शांति के लिए हथेली की अंगुलियों में सोने, चाँदी, तांबें, लोहे जैसी अलग-अलग धातुओं की बनी अंगूठियों में अलग-अलग रत्नों को पहनने पर जोर देते हैं।

नाखूनों की बनावट एवं उनके रंगों के आधार पर मनुष्य के स्वभाव के बारे में जाना जा सकता है।

नमस्कार मुद्रा से पिरामिड का आकार बनता है जिससे डायाफ्राम के ऊपर का भाग ऊर्जा का सक्रिय क्षेत्र बनने लगता है। आभा मण्डल शुद्ध होने लगता है। अशुभ सोच शुभ में बदलने लगती है।

चीनी पंच तत्त्व सिद्धान्तानुसार हृदय, फेंफड़े, पेरीकार्डियन (मस्तिष्क) मेरेडियन एवं उसके सहयोगी पूरक अंग छोटी आंत, बड़ी आंत, ट्रिपल वार्मर (मेरुदण्ड) की पाँच प्रमुख ऊर्जाओं (वायु, ताप, नमी, शुष्कता एवं ठण्डक) के मुख्य प्रतिवेदन बिन्दु हथेली और कोहनी के बीच होते हैं। मेरेडियन की दायें और बायें शरीर में समान स्थिति होने से उनमें प्रवाहित ऊर्जाओं का असंतुलन रोगों का मुख्य कारण होता है। परन्तु नमस्कार मुद्रा द्वारा जब दोनों हथेलियों से कोहनी तक के भाग को आपस में मिलाया जाता है तो इन मेरेडियनों में पाँचों ऊर्जाओं का संतुलन होने लगता है। परिणामस्वरूप शरीर में दायें-बायें संतुलन होने लगता है। रक्तचाप

सामान्य हो जाता है। श्वसन तंत्र बराबर कार्य करने लगता है। इस मुद्रा से डायाफ्राम के ऊपर स्थित हृदय, फेफड़े और मस्तिष्क संबंधी सभी रोगों में विशेष लाभ होता है। हाथों एवं कंधों के रोगों में इस मुद्रा के विशेष चमत्कारिक परिणाम आते हैं।

हथेली की अंगुलियों में प्राण ऊर्जा का विशेष प्रवाह होता हैं। इसी कारण रेकी, प्राणिक हीलिंग द्वारा उपचार एवं आशीर्वाद हथेली से ही दिया जाता है। आभा मंडल के फोटोग्राफ्स से इसे स्पष्ट देखा जा सकता है।

वैसे तो अधिकांश मुद्राओं को लगभग ४८ मिनट करने से पूर्ण लाभ प्राप्त होता है। रोग की अवस्था में साधारण लगने वाली इस मुद्रा के करने के चन्द मिनटों पश्चात् कोहनी से कंधों के बीच रोग की स्थितिनुसार दर्द होने लगता है। अतः प्रारम्भ में अभ्यास के रूप में जितनी देर दर्द सहन कर सकें उतना ही करें एवं अभ्यास के पश्चात् धीरे-धीरे समय को बढ़ाया जा सकता है। जब तक पूर्ण अभ्यास न हो, थोड़े-थोड़े अन्तराल में इस मुद्रा को पुनः पुनः किया जा सकता है। इस मुद्रा में गर्दन को बायें, दायें, ऊपर कर, शरीर को अलग-अलग स्थिति में मोड़कर कुछ देर तक करने से कंधों, हाथों एवं डायाफ्राम के ऊपर वाले भाग में प्राण ऊर्जा के अवरोध के अनुरूप तनाव आता है। जितना तनाव सहन किया जा सके उतने समय तक ही नमस्कार मुद्रा करनी चाहिए। शरीर के दाहिने एवं बायें भाग की हृदय, फेंफड़े, पेरीकार्डियन मेरेडियन में प्राण ऊर्जा का प्रवाह संतुलित होने लगता है जिससे उत्पन्न तनाव दूर होते हैं। वापस साधारण स्थिति में आते ही, तनावग्रस्त भाग में रक्त का प्रवाह ठीक होने लगता है। संबंधित मांसपेशियों में लचीलापन बढ़ने लगता है । दर्दस्थ और कंधों से मांसपेशियों से संबंधित हाथ संबंधित एक्यूप्रेशर प्रतिवेदन बिन्दुओं पर दबाव दिया जाये या दाणा मेथी टेप पर चिपका कर उस सीन पर लगा दी जाये या खिंचाव के कप कुछ देर लगाए जाए अथवा साधारण या चुम्बकीय मसाज और अन्य संबंधित उपचार किया जाये तो दर्दस्थ भाग से दर्द कम होने लगता है और पुराने असाध्य रोगों में शीघ्र राहत होने लगती है।

(क्रमशः)

'को-क्यू-10' - एमा की कहानी

अस्सी साल की एमा मेरी एक खुशमिज़ाज मरीज़ है। क़रीब चार साल पहले कार्डियोलॉजिस्ट ने उन्हें कार्डियोमायोपैथी से पीड़ित बताया। २० प्रतिशत इंजेक्शन फ्रैक्शन ने एमा की जिंदगी को गंभीर रूप से सीमित कर दिया था। कार्डियोलॉजिस्ट ने उन्हें अनेक दवाएँ दीं, जिनमें धड़कन को नियमित करने के लिए कार्डारोन नामक दवा भी थी। बहरहाल, इस दवा ने एमा को बहुत बीमार कर दिया और जल्द ही वे कुछ भी खा पाने में असमर्थ हो गई। न सिर्फ उनका वजन काफी कम हो गया था, बल्कि दवाओं ने उनकी थायरॉइड ग्रंथि को भी क्षतिग्रस्त कर दिया। थायरॉइड का उपचार शुरू किया गया, पर यह कहना बेमानी होगा कि एमा गंभीर रूप से बीमार ही रहीं। उम्र के कारण वे हृदय प्रत्यारोपण भी नहीं करवा सकती थीं।

पारंपरिक उपचार ने एमा की हालत को बदतर बना दिया था।

निराशा की स्थिति में वे मेरे पास आई, क्योंकि उन्होंने यह सुना था कि इस प्रकार की समस्या में मैंने दूसरों की मदद की थी। उनका परीक्षण करने के बाद मैं यह देख सकता था कि कार्डारोन से उन्हें ख़ासा नुकसान हो रहा था। वे यह दवा बंद करना चाहती थीं और में भी उनसे सहमत था। मेरी व्यक्तिगत सोच यह थी कि अगर एमा ने यह दवाई लेना जारी रखी, तो वे एक या दो महीने ही जिंदा रह पाएँगी। कार्डारोन बंद करने के बाद मैंने अपने इस नए मरीज को ३०० मिलीग्राम को क्यू-१० देना शुरू कर दिया।

एमा खुश थी कि उनकी भूख वापस आ गई थी तथा ताक़त भी बढ़ गई थी। अब उनकी साँसें भी सामान्य हो रही थीं। उनकी गतिविधियाँ जल्दी ही फिर से सामान्य होने लगीं। चार महीने बाद कार्डियोलॉजिस्ट ने उनका इकोकार्डियोग्राम

किया और यह देखकर खुश हो गया कि उनका इजेक्शन फ्रैक्शन बढ़कर ४२ प्रतिशत हो गया है ।

अब एमा हृदय की बजाय अपनी आर्थराइटिस की समस्या से अपेक्षाकृत अधिक परेशान थी। ये अपने बाएँ पैर के घुटने में टोटल रिप्लेसमेंट भी करवा सकती थीं । जिस महिला के जीने की उम्मीदें कम थीं, उसके लिए यह कोई बुरी बात नहीं थी।

एमा की कार्डियोमायोपैथी का उपचार हुए अब चार साल बीत चुके हैं और अब वे एक खुशहाल व प्रसन्न जिंदगी जी रही हैं।

* * *

डॉक्टरों को अपने मरीजों का वकील होना चाहिए। हमें यह जानने और समझने की जरूरत है कि प्राकृतिक उत्पाद किस प्रकार हमारे मरीज़ों की मदद कर सकते हैं। सेहत के बारे में एक आधारभूत सिद्धांत है जिस पर मैं ज़्यादा ज़ोर नहीं देना चाहूँगा । हम इस बात पर जोर देते हैं कि सिर्फ प्राकृतिक रूप से ही बीमारियों को ठीक कर शरीर की कार्यक्षमता को सामान्य स्तर पर लाया जा सकता है ताकि शरीर सामान्य स्तर तक काम कर सके और इसी से सभी प्रकार के इलाज संभव हैं।

इस प्रकार के अतिरिक्त तत्वों को केवल सहायक दवा के रूप में ही लेने की सलाह देना बेहतर होता है । कार्डियोमायोपैथी के मरीज़ों को सामान्य दवा के साथ पर्याप्त व संतुलित एँटीऑक्सीडेंट व मिनरल टेबलेट के साथ को-क्यू-१० की अपेक्षाकृत अधिक मात्रा (३००-५०० मिग्रा प्रतिदिन) लेना चाहिए। हम अनियमित कार्य कर रहे हृदय को प्राकृतिक रूप से कार्य करने लिए मदद करते हैं, जिससे मरीज के स्वास्थ्य में उल्लेखनीय सुधार होता है। ■

गत महीने की संस्था की गतिविधियाँ

- अन्नक्षेत्र में भोजन के २८ तथा हल्दी दूध के २१ कार्ड बनाए।
- १६७ कैंसरग्रस्त परिवारों को अनाज वितरित किया गया ।
- प्रतिदिन १०१४ मरीज़ों को फल दिया गया ।
- २१ मरीज़ों को रक्त के लिए सहायता प्रदान की गई।
- ७ मरीज़ों के रहने की व्यवस्था की गई।
- ११ मरीज़ों को अलग-अलग संस्था में आवेदन पत्र देकर उपचार पत्र बनाकर दिए गए, जिससे उन्हें अच्छा प्रतिसाद मिल रहा है।
- कैंसर पीड़ित मरीजों को ९,९७,२४५/- रु. की दवाएँ दी गई ।
- अन्य मरीजों को ४,८३,२२०/- रु. की दवाएँ दी गई ।
- ४७ घायल पशु-पक्षीओं को ईलाज के लिए अस्पताल पहुँचाया गया ।
- पशु-पक्षीओं के ईलाज के लिए रु. ५,९१,२१०/- की दवाएँ दी गई ।
- अपंग व्यक्तिओं को ४ वोकर, ३ वॉकिंग स्टीक, ५ कमोड चेअर, ४ व्हिलचेअर, ६ पलंग, ४ ऑक्सिजन मशीन और ३ ऑक्सिजन सिलेण्डर दिए गये।
- ४ कैंसरग्रस्त मरीज़ों की फाईल बनाई गई ।
- ९४ मरीज़ों ने निःशुल्क ऐम्ब्युलेंस् सेवा का लाभ लिया ।
- ४ कर्करोग पीड़ितों को कोलोस्टॉमी बेग कम कींमत पर दी गई ।
- ४ लावारिस कैन्सरग्रस्त मरीज का अंतिम संस्कार किया गया ।
- रास्ते में बेहाल स्थिति में पड़े रहनेवाले १३ व्यक्तिओं को वृद्धाश्रम पहुँचाया गया।

देहदान प्रतिज्ञा पत्र

जीवन ज्योत कैंसर रिलीफ एन्ड केअर ट्रस्ट की विभिन्न प्रवृत्तियों में से एक प्रवृत्ति 'देहदान' की है, किसी भी भाई-बहन की इच्छा वसियत (विल) (मरने से पहले के घोषणापत्र) बनाने की हो, तो स्वतः के हाथ से एक प्रतिज्ञापत्र भरना होगा। स्वतः के शरीर या शरीर के किसी भी भाग को आधुनिक प्रगति के लिए या मेडिकल साइन्स के विद्यार्थियों के काम में आए इस हेतु से प्रतिज्ञापत्र बनाए गये हैं। प्रतिज्ञापत्र जीवन ज्योत संस्था के कार्यालय से आपको मिलेंगे या कुरियर द्वारा आपको पहुंचा दिये जाएंगे।

युं ही हम अपने दिल को साफ़ रखा करते थे, पता नहीं था की किमत चेहरों की होती है।

शिल्पकार

प्रस्तुति - क्रिशा शर्मा *(विद्याविहार)*

एक थका-माँदा शिल्पकार लंबी यात्रा के बाद किसी छायादार वृक्ष के नीचे विश्राम के लिये बैठ गया। अचानक उसे सामने एक पत्थर का टुकड़ा पड़ा दिखाई दिया। उस शिल्पकार ने उस सुंदर पत्थर के टुकड़े को उठा लिया, सामने रखा और औजारों के थैले से छेनी-हथौड़ी निकालकर उसे तराशने के लिए जैसे ही पहली चोट की, पत्थर जोर से चिल्ला पड़ा : ''उफ मुझे मत मारो।''

दूसरी बार वह रोने लगा : ''मत मारो मुझे, मत मारो मत मारो !''

शिल्पकार ने उस पत्थर को छोड़ दिया और अपनी पसंद का एक अन्य टुकड़ा उठाया और उसे हथौड़ी से तराशने लगा। वह टुकड़ा चुपचाप छेनी-हथौड़ी के वार सहता गया और देखते ही देखते उस पत्थर के टुकड़े मे से एक देवी की प्रतिमा उभर आई।

उस प्रतिमा को वहीं पेड़ के नीचे रख वह शिल्पकार अपनी राह पकड़ आगे चला गया। कुछ वर्षों बाद उस शिल्पकार को फिर से उसी पुराने रास्ते से गुजरना पड़ा, जहाँ पिछली बार विश्राम किया था।

उस स्थान पर पहुँचा तो देखा कि वहाँ उस मूर्ती की पूजा अर्चना हो रही है, जो उसने बनाई थी। भीड़ है, भजन आरती हो रही है, भक्तों की पंक्तियाँ लगीं हैं, जब उसके दर्शन का समय आया, तो पास आकर देखा कि उसकी बनाई मूर्ती का कितना सत्कार हो रहा है।

जो पत्थर का पहला टुकड़ा उसने उसके रोने चिल्लाने पर फेंक दिया था वह भी एक ओर में पड़ा है और लोग उसके सिर पर नारियल फोड़कर मूर्ती पर चढ़ा रहे है।

शिल्पकार ने मन ही मन सोचा कि: जीवन में कुछ बन पाने के लिए यदि शुरु में अपने जीवन के शिल्पकार (माता-पिता, शिक्षक, गुरु आदि) को पहचानकर, उनका सत्कार कर, कुछ कष्ट झेल लेने से व्यक्ति का जीवन बन जाता है, और बाद में सारा विश्व उसका सत्कार करता है। लेकिन जो डर जाते हैं और बचकर भागना चाहते हैं वे बाद में जीवन भर कष्ट झेलते हैं! ■

हास्य का हसगुल्ला

प्रस्तुति : हेमु मोदी *(सुरत)*

❖ लोग दुकानों के बाहर टोटके के नींबू मिर्च लटकाते हैं। अगले शनिवार को नये नींबू मिर्च लटकाते हैं और पुराने सड़क पर फेंक देते हैं। बचपन में कहावत सुनी थी कि सड़क पर नींबू मिर्च को कोई बच्चा कुचल देता है तो उसे बाद में बदसूरत पत्नी मिलती है। मेरे मन यह बात घर कर गयी। मैं स्कूल आते जाते समय हमेशा ऐसे नींबू मिर्च से बच कर चलता था।

नतीजा अच्छा रहा, घरवालों ने मुझे खूबसूरत पत्नी दिला दी। शादी के कुछ वर्षों बाद पत्नी को ये बात बताई, कि कैसे मैं नींबू मिर्च वाले टोटकों से बचता रहा और तुम मुझे मिल गयी।

पत्नी ने जवाब दिया, 'ये कहावत बचपन मे मैंने भी सुनी थी, पर मैंने विश्वास नहीं किया। कई बार नींबू मिर्च कुचल दिये। नतीजे में आप से शादी हो गयी।'

❖ हाथी ने चींटी को प्रपोज किया।

चींटी ने जवाब दिया, ''मैं भी तुम से प्यार करती हूं।''

हाथी: ''तो फिर शादी से क्यों मना करती हो।''

चींटी: ''मैं तुम से कितनी बार कह चुकी हूं! मेरे घर में इंटर-कास्ट शादी तो हो सकती है, लेकिन इंटर-साइज नहीं।''

❖ छोटी - सी लड़की ने अपनी मां से पूछा - ''मम्मी, तुमने कहा था ना कि परियों के पंख होते हैं और वह उड़ सकती हैं ना ?''

मम्मी - ''हां बेटी, कहा था।''

लड़की - ''कल रात डैडी कामवाली बाई को कह रहे थे कि वह तो परी हैं। तो वह कब उड़ेगी मम्मी ?''

मम्मी (छोटी सी लड़की से) - 'सुबह होते ही वो तो उड़ जाएगी बेटी, लेकीन तेरे पापा अभी उड जायेंगे ।'' ■

प्रकाशन कॉ–ऑर्डिनेटर : समीर पारेख, *क्रिएटिव पेज सेटर्स,* घाटकोपर

तस्वीर बोल रही हैं, संस्था के गौरव की

RNI. MAHHIN/2012/45662 Post Reg. MCE/141/2024-26.
Licence to Post Without Prepayment No. MR/TECH/WPP-208/EAST/2024-26.
Posted at Mumbai Patrika Channel Sorting Office, Mumbai- 400 001
Published and Posting on 15th of every month.

To,

तस्वीर बोल रही हैं, संस्था के गौरव की

Printed, Published, Edited & Owned by - **Mr. H. K. Savla,** Published from **Jeevan Jyot Cancer Relief & Care Trust,** 3/9, Kondaji Chawl, Jerbai Wadia Road, Near Tata Hospital, Parel, Mumbai - 400 012. & Printed at **P. H. Printer,** 18-P, D. L. Jain Compound, Opp. Voltas Ltd., 64, Dr. B. A. Road, Chinchpokli (E), Mumbai 400 012 ***Editor*** : **H. K. Savla**